गुणवत्तापूर्ण स्थायी फार्मास्युटिकल्स बनाने पर दिया जोर

ग्लोबल फार्मास्युटिकल क्वालिटी समिट आयोजित

बी.बी.एन., 27 फरवरी (ब्यूरो): इंडियन फार्मास्युलटिकल अलायंस (आई.पी.ए.) द्वारा आयोजित 2 दिवसीय ग्लोबल फार्मास्यूटिकल क्वालिटी समिट 2022 क रविवार को समापन हो गया। इस दौरान उद्योग के नेतृत्वकर्त्ताओं और परितंत्र के विनियामकों ने परिचालन, टीकों के विकास और स्थातयित्व में उत्कृष्टता एवं गुणवत्ता अर्जित करने पर विचार-विमर्श किया। विभिन्न उद्योगों के नेतृत्वकर्त्ताओं ने फार्मास्यूटिकल उद्योग के लिए नवाचार, टैक्नोलॉजी और संभावित शिक्षाओं पर विचार सांझा किए।

एक सिरे से दूसरे सिरे तक स्थायित्वपूर्ण परिचालन एवं गुणवत्ता में उत्कृष्टता, आगे का मार्ग विषय पर पैनल चर्चा में भारत की अग्रणी फार्मास्युटिकल कंपनियों के सी.ई.ओ. ने भाग लिया। इनमें सिपला, डा. रेड्डीज, ल्यूपिन, सनफार्मा, टोरेंट और जाइडस शामिल थीं। सत्र का संचालन मैकिंसी एंड कंपनी के सीनियर पार्टनर गौतम कुमरा ने किया। बायोसिमिलर्स जैसे नए साधनों पर रखते हुए सिपला के सी.ई.ओ. उमंग वोहरा ने कहा कि हमने जेनेरिक्स के लिए आंतरिक आधार पर अपनी तकनीकें विकसित की हैं। अब हमें उनके साथ मिलकर काम करना है, जो ऐसा पहले ही कर चुके हैं। कुछ तकनीकों के लिए जो प्रतिभा चाहिए वह भारत में मौजूद नहीं है, इसलिए वैश्विक भागीदारों के साथ मिलकर काम करने से यह समस्या दूर करने में मदद मिलेगी।

डा. रेड्डीज के चेयरमैन जी.वी. प्रसाद ने कहा कि डिजिटलाइजेशन को रोका नहीं जा सकता, लेकिन डिजिटाइज करने में अब भी एक चुनौती है। डिजिटलाइजेशन की प्रक्रिया के प्रभाव को बढ़ाने के लिए मौलिक प्रक्रियाओं की दक्षता और समझ चाहिए। ल्यूपिन के प्रबंध निदेशक नीलेश गुप्ता ने कहा गुणवत्ता और अनुपालन का मुद्दा कंपनी के लिए अपना होता है और इस तरह के फोरम्स ने उसमें बदलाव किया है, जिन्होंने हमें सांझा लक्ष्य की दिशा में काम करने की अनुमति दी है। सूचना सांझा करना एक बड़ा सहयोग तंत्र रहा है। हम दुनिया की फार्मेसी के रूप में जाने गए हैं और यह स्थिति पाना हमारा सौभाग्य है। इंडियन फार्मास्युटिकल अलायंस (आई.पी.ए.) 24 शोध आधारित राष्ट्रीय फार्मास्युटिकल कंपनियों का प्रतिनिधित्व करता है। आई.पी.ए. की कंपनियां मिलकर फार्मास्युटिकल शोध एवं विकास में निजी क्षेत्र के 85 प्रतिशत से ज्यादा निवेश की जिम्मेदार हैं। ये कंपनियां देश में दवाओं और फार्मास्युटिकल्स के निर्यात में 80 प्रतिशत से ज्यादा योगदान देती हैं और 57 प्रतिशत से ज्यादा घरेलू बाजार को सेवा देती हैं।